1938-42 बैच के पुरातन छात्र जिनेंद्र कुमार जैन बोले, हर क्षेत्र में ऊंचा होगा बीएचयू-आइआइटी का नाम

'100 साल' का हमारा संस्थान और '100 साल' के हम

'शतक' का हर किसी के जीवन में बहुत ही अहम महत्व होता है। चाहे वह खेल का मैदान हो या फिर जीवन का पड़ाव। उसमें भी अगर डबल सेंचुरी यानि '100-100' का संयोग एक साथ हो तो क्या कहने। जी हां, हम एक ऐसी शख्सियत की बात करने जा रहे हैं जो जीवन के 100वें पायदान पर पहुंच गए है। यही नहीं जिस संस्थान में वह पढ़े हैं उसका भी 100 साल पूरा हुआ है। हम बात कर रहे हैं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बीएचयू के 1938-42 बैच के पुरातन छात्र जिनेंद्र कुमार जैन की। खास बात है कि जिनेंद्र और आइटी कालेज (वर्तमान में आआइटी) का जन्म 1919 हुआ। इस खुशी के पल को उन्होंने दैनिक जागरण के संवाददाता मुकेश चंद्र श्रीवास्तव के साथ साझा किया। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश...

साक्षात्कार

● अपने संस्थान के 100 साल पूरा होने पर आप क्या महसूस कर रहे हैं?

- वह तो बहुत ही खुशी की बात है। यह मेरी किस्मत है कि मैं शताब्दी समारोह में शामिल हो पाया।

● आप भी 100 साल के हो गए हैं?

-जी हां, मेरा भी जन्म 1919 को हुआ था और आइटी कालेज का भी। हालांकि, हमारे सौ साल पूरा होने में अभी चार साल बाकी हैं। सन के अनुसार मैं भी 100 साल का हो गया हूं।

● क्या बदलाव लगा यहां पर?

-मैं अक्सर ही यहां पर आया करता था। अब उम्र काफी हो गई है, इस लिए चलने-फिरने में सहारा लेने की जरूरत पड़ती है मगर जज्बा अभी 100 साल के युवा का है। हमारा शिक्षा स्थल कालेज से अब संस्थान बन गया है।

बीएचयू के स्वतंत्रता भवन में 1938-42 बैच के आइआइटी के पुरातन छात्र जिनेंद्र जैन का स्वागत करते ग्लोबल एलुमनी एसोसिएशन के चेयरमैन नितिन मल्होत्रा व साथ में जिनेंद्र की बेटी शेफाली गोयल (दाएं) व डीन प्रो. एके त्रिपाठी (बाएं)। ● जागरण

● यहां के पुराना पल और उपलब्धि?

-मैंने ने यहां पर करीब 80 साल पहले पढ़ाई की। पास होने के बाद मुझे पूर्व कुलपति व पूर्व राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के हाथों डिग्री पाना बड़ी उपलब्धि है।

● अपने संस्थान के 100 साल पूरा होने पर क्या संदेश देंगे?

-हमारी शुभकामना है कि बीएचयू आइआइटी खूब तरक्की करेगा। हर क्षेत्र में इसका ऊंचा नाम हो। हालांकि इसके लिए यहां के शिक्षकों, कर्मचारियों व छात्र-छात्राओं को कड़ी मेहनत करनी होगी।

● महामना के बारे में क्या कहना है?

-महामना को चेहरा आज भी याद है। महामना भारत रत्न के लिए हकदार थे। उनका इस संस्थान के साथ ही देश में भी बेहतर योगदान रहा है।

गाए कुलगीत और महामना को प्रणाम: जिनेंद्र ने मंच पर आए तो उनको बैठने के लिए कुर्सी दी जा रही थी, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। मंच संभालते ही मालवीय जी को प्रणाम किया और कुलगीत भी गाए।

इनके पहुंचने पर खड़े हो गए देश-विदेश के पुरातन छात्र

जिनके नाम पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है उनकी हाथों से जिनेंद्र को डिग्री पाने का भी इनका गौरव प्राप्त है। संस्थान के 100 साल पूरा होने पर आयोजित शताब्दी समारोह में उनको खास आमंत्रित किया गया और वे चले भी आए। भले ही उनको अपनी बेटी शेफाली गोयल, दामाद राकेश गोयल व नाती शतम मोहन का साथ लेना पड़ा। रविवार को जब जिनेंद्र बीएचयू के स्वतंत्रता भवन पहुंचे तो देश-विदेश से आए सभी पुरातन व वर्तमान विद्यार्थियों ने जोरदार स्वागत किया। ग्लोब एलुमनी एसोसिएशन के चेयरमैन नितिन मल्होत्रा, एलुमनी सेल के डीन प्रो. एके त्रिपाठी ने मोमेंटो देकर सम्मानित किया।